



Ancient Vedic Mantras and Rituals





Shrimad Bhagavad Gita Chapter-4 Shalok-5 | श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय चार-श्लोक पाँच | PDF

अध्याय 4 – ज्ञान कर्म संन्यास योग
श्लोक 5

श्रीभगवानुवाच ।

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन ।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप ॥5॥
सरल हिंदी में भावार्थ

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं—

हे अर्जुन! मेरे और तुम्हारे अनेक जन्म हो चुके हैं। हे परंतप! उन सभी जन्मों को मैं जानता हूँ, लेकिन तुम उन सभी जन्मों को नहीं जानते।

विस्तृत व्याख्या

भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन के अनेक जन्म

इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को बताते हैं कि उनके और अर्जुन के अनेक जन्म हो चुके हैं।



भगवान यह स्पष्ट करते हैं कि वर्तमान जीवन ही उनकी या अर्जुन की पूरी यात्रा नहीं है। जीवात्मा अनेक जन्मों के माध्यम से संसार में आती-जाती रहती है।

इस प्रकार भगवान अर्जुन को जन्म और पुनर्जन्म के गहरे आध्यात्मिक सिद्धांत को समझाते हैं।

भगवान अपने सभी जन्मों को जानते हैं

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि वे अपने सभी पिछले जन्मों को जानते हैं। यह भगवान के दिव्य और सर्वज्ञ स्वरूप को दर्शाता है।

सामान्य जीव अपने पिछले जन्मों की घटनाओं को याद नहीं रखता, लेकिन भगवान अपने सभी प्रकट होने और दिव्य लीलाओं को जानते हैं।

इससे भगवान और सामान्य जीव के बीच का महत्वपूर्ण अंतर स्पष्ट होता है।

अर्जुन अपने पिछले जन्मों को नहीं जानते

भगवान कहते हैं कि अर्जुन भी अनेक जन्मों से गुजर चुके हैं, लेकिन उन्हें अपने पिछले जन्मों की जानकारी नहीं है।

यह सामान्य जीवों की स्थिति को दर्शाता है। जन्म बदलने के साथ जीव अपनी पिछली स्मृतियों को भूल जाता है और नए शरीर तथा नई परिस्थितियों में जीवन प्रारंभ करता है।



भगवान और जीव के बीच अंतर

इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक सत्य बताते हैं। भगवान और जीवात्मा दोनों के अनेक जन्म हो सकते हैं, लेकिन दोनों की स्थिति समान नहीं है।

जीव अपने पिछले जन्मों को भूल जाता है, जबकि भगवान अपने सभी दिव्य प्रकट होने को जानते हैं। भगवान की चेतना पूर्ण है, जबकि सामान्य जीव की चेतना भौतिक प्रकृति से प्रभावित होती है।

स्मृति और विस्मृति का रहस्य

मनुष्य अपने वर्तमान जीवन की बहुत-सी घटनाओं को भी समय के साथ भूल जाता है। पिछले जन्मों की स्मृति का न होना इसी भौतिक विस्मृति का एक गहरा रूप माना जाता है।

भगवान श्रीकृष्ण की चेतना ऐसी विस्मृति से परे है। वे सभी कालों और अपने सभी दिव्य प्रकट होने को जानते हैं।

यह हमें समझाता है कि परमात्मा का ज्ञान सामान्य मानवीय स्मृति से कहीं अधिक व्यापक है।

भगवान का दिव्य स्वरूप

यह श्लोक आगे आने वाले उपदेश की भूमिका तैयार करता है, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण अपने दिव्य जन्म और कर्म के रहस्य को और स्पष्ट करेंगे।

भगवान का संसार में प्रकट होना सामान्य जीव के कर्मों के कारण होने वाले जन्म के समान नहीं है।



वे अपनी दिव्य शक्ति से संसार में प्रकट होते हैं और धर्म की स्थापना तथा जीवों के कल्याण के लिए कार्य करते हैं।

Jnana Karma Sannyasa Yoga in Practice

यह श्लोक हमें आत्मा की यात्रा, जन्म और पुनर्जन्म तथा भगवान के दिव्य स्वरूप के बारे में चिंतन करने की प्रेरणा देता है।

Jnana Karma Sannyasa Yoga के मार्ग पर साधक यह समझने का प्रयास करता है कि शरीर बदलता रहता है, लेकिन आत्मा का अस्तित्व शरीर से परे है।

भगवान के दिव्य स्वरूप को समझकर और अपने कर्मों को सही ज्ञान तथा समर्पण के साथ करते हुए व्यक्ति धीरे-धीरे भौतिक आसक्ति से ऊपर उठ सकता है।

मुख्य बिंदु

- भगवान श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों के अनेक जन्म हो चुके हैं।
- भगवान अपने सभी पिछले जन्मों को जानते हैं।
- अर्जुन अपने पिछले जन्मों को नहीं जानते।
- सामान्य जीव जन्म बदलने के साथ अपनी पिछली स्मृतियों को भूल जाता है।
- भगवान की चेतना पूर्ण और सर्वज्ञ है।



- भगवान और सामान्य जीव के जन्मों में महत्वपूर्ण अंतर है।
- भगवान का दिव्य प्रकट होना सामान्य जीव के जन्म के समान नहीं है।
- यह श्लोक जन्म, पुनर्जन्म, स्मृति और भगवान के दिव्य स्वरूप को समझने का मार्ग दिखाता है।

गूढ़ आध्यात्मिक अर्थ

यह श्लोक भगवान और जीवात्मा के बीच के अंतर को गहराई से समझाता है। जीवात्मा अनेक जन्मों की यात्रा करती है, लेकिन प्रत्येक जन्म में अपने पिछले जीवन की स्मृतियों को भूल जाती है। इसके विपरीत, भगवान अपने सभी दिव्य प्रकट होने और उनसे संबंधित घटनाओं को जानते हैं।

इस श्लोक का गहरा संदेश यह है कि भगवान की चेतना अनंत और पूर्ण है, जबकि जीव की चेतना भौतिक प्रकृति के प्रभाव से सीमित और विस्मृति से प्रभावित होती है। इसलिए भगवान के दिव्य स्वरूप को समझने के लिए केवल सामान्य भौतिक दृष्टि पर्याप्त नहीं है।

जब मनुष्य आत्मा और शरीर के अंतर को समझता है तथा अपने कर्मों को भगवान के प्रति समर्पित भाव से करता है, तब वह जन्म और मृत्यु के चक्र से ऊपर उठने की दिशा में आगे बढ़ सकता है।



पदों का भावार्थ

श्रीभगवानुवाच – श्रीभगवान ने कहा

बहूनि – अनेक

मे – मेरे

व्यतीतानि – बीत चुके हैं

जन्मानि – जन्म

तव – तुम्हारे

च – और

अर्जुन – हे अर्जुन

तानि – उन सभी को

अहम् – मैं

वेद – जानता हूँ

सर्वाणि – सभी

न – नहीं

त्वम् – तुम

वेत्थ – जानते हो

परन्तप – हे शत्रुओं का दमन करने वाले अर्जुन



श्लोक का संदेश

भगवान श्रीकृष्ण बताते हैं कि उनके और अर्जुन के अनेक जन्म हो चुके हैं। भगवान अपने सभी जन्मों को जानते हैं, जबकि अर्जुन अपने पिछले जन्मों को नहीं जानते। यह श्लोक भगवान की सर्वज्ञता और सामान्य जीव की सीमित स्मृति के बीच अंतर को स्पष्ट करता है। साथ ही यह हमें आत्मा, पुनर्जन्म और भगवान के दिव्य स्वरूप को समझने की प्रेरणा देता है। आत्मज्ञान और भगवान के प्रति समर्पित कर्म के माध्यम से मनुष्य भौतिक बंधनों से ऊपर उठकर आध्यात्मिक उन्नति की ओर बढ़ सकता है।

RELATED ARTICLE



Chapter-4 Shalok-3



Chapter-4 Shalok-4



THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS
CONTENT ON



vedicprayers.com

